सार

पाण्डुलिपियाँ किसी भी समाज की अमूल्य धरोहर मानी गयी है। पाण्डुलिपियों को जैन परम्परा में सुरक्षित रखने का मूल आधार होने के कारण पाण्डुलिपियों को प्रारम्भ से ही पूज्यता तथा विशेष आदर–भाव मिला है उन्हें प्राणों से भी प्यारी और पवित्र धरोहर मानकर जैनों ने अपने तीन दैनिक आराध्यों–देव, शास्त्र एवं गुरु में से विविध पाण्डुलिपियों के रूप में सुरक्षित शास्त्रों को भी समान रूप से पूज्य मानकर उनकी सुरक्षा के लिये प्रारम्भ से ही अनेकविध प्रयत्न किये।

पाण्डुलिपियों में चित्रित कलात्मक चित्र अध्ययन के लिये प्रेरित करते हैं। प्राचीन पाण्डुलिपियों के चित्र भी कलात्मक दृष्टिकोण से चित्रकला में अपना स्थान रखते हैं इसका अध्ययन शोधार्थिनी द्वारा सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ एक कलात्मक अध्ययन आदिपुराण के सन्दर्भ में किया गया है।

शोधार्थिनी द्वारा शोध प्रबन्ध के तथ्यात्मक स्थापन हेतु विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध प्रबन्ध को कुल 7 अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : जैन धर्म की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय : जैन पाण्डुलिपियों का प्राचीन इतिहास

तृतीय अध्याय : 3.1 जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि अध्ययन

3.2 जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि चित्र

चतुर्थ अध्याय : 4.1 पुष्पदंत रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि अध्ययन

4.2 पुष्पदंत रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि चित्र

पंचम अध्याय : 5.1 आदिपुराण पाण्डुलिपि चित्र प्रविधि

5.2 आदिपुराण पाण्डुलिपि के चित्रों का कलात्मक अध्ययन

षष्ठ अध्याय : पुष्पदंत रचित एवं जिनसेनाचार्य द्वारा आदिपुराण

पाण्डुलिपि चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

सप्तम अध्याय : भारतीय चित्रकला में सचित्र जैन पाण्डुलिपियों का योगदान

उपसंहार : अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता